nwda.gov.in

बुंदेलखंड में खुशहाली के नए दरवाज़े खोलेगा केन-बेतवा लिंक प्रोजेक्ट: PM

PTI

बुधवार को केन-बेतवा प्रोजेक्ट की आधारशिला के दौरान पीएम मोदी।

44,605 ₹ करोड़ रुपये की लागत आने का अनुमान इस परियोजना पर

2,000 गावों के करीब 7.18 लाख किसान परिवारों को लाभ मिलेगा

अटल बिहरी वाजपेयी की जन्म शताब्दी पर स्मारक डाक टिकट जारी किया

■ पीटीआई, खजुराहो

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को मध्य प्रदेश के खजुराहो में केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना की आधारशिला रखी। अधिकारियों ने बताया कि इस परियोजना के तहत मध्य प्रदेश के 10 जिलों के करीब 44 लाख और उत्तर प्रदेश के 21 लाख लोगों को पेयजल उपलब्ध होगा। उन्होंने बताया कि इस परियोजना पर कुल 44,605 करोड़ रुपये की लागत आने का अनुमान है। इस परियोजना से 2,000 गांवों के करीब 7.18 लाख किसान परिवारों को लाभ मिलेगा। इससे 103 मेगावॉट बिजली और 27 मेगावाट सौर ऊर्जा भी पैदा होगी।

प्रधानमंत्री मोदी ने इस अवसर पर पूर्व प्रधानमंत्री दिवंगत अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म शताब्दी पर उनकी स्मृति में एक स्मारक टिकट और सिक्का भी जारी किया। तत्कालीन वाजपेयी सरकार ने सिंचाई जरूरतों के साथ-साथ बाढ़ से निपटने के लिए नदियों को जोड़ने का प्रस्ताव रखा था। प्रधानमंत्री मोदी ने खजुराहो कार्यक्रम में 437 करोड़ रुपये की लागत से 1,153 अटल ग्राम सेवा सदनों के निर्माण के लिए भी भूमिपूजन किया। प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर मध्य प्रदेश के खंडवा जिले के ओंकारेश्वर में फ्लोटिंग सोलर प्रोजेक्ट को भी राष्ट्र को समर्पित किया।

'सुशासन और कांग्रेस एक साथ नहीं चल सकते': *उन्होंने कहा कि कांग्रेस और सुशासन एक साथ नहीं चल सकते, क्योंकि पिछली कांग्रेस सरकारों ने परियोजनाओं की आधारशिला रखने के बाद 35-40 साल तक इसमें कुछ नहीं किया और देरी की। प्रधानमंत्री ने कहा कि केन-बेतवा नदी को जोड़ने से बुंदेलखंड क्षेत्र में समृद्धि और खुशहाली के नए द्वार खुलेंगे।*

वाजपेयी का था ड्रीम प्रोजेक्ट: नदी जोड़ो राष्ट्रीय परियोजना पूर्व पीएम अटल बिहारी वाजपेयी का ड्रीम प्रोजेक्ट था। उन्होंने करीब 20 साल पहले 'नदी जोड़ो अभियान' की संकल्पना की थी। उनका सपना था, देशभर की नदियां आपस में जुड़ें और जल की एक-एक बूंद का उपयोग समाज और राष्ट्र के लिए हो।

प्रोजेक्ट में इसलिए हुई देरी: देश की पहली नदी जोड़ो परियोजना केन-बेतवा को कई दिक्कतों का भी सामना करने पड़ा, जिससे इसमें देरी होती गई। इस प्रोजेक्ट को पर्यावरण संबंधी मंजूरी से लेकर NGT में भी चुनौती तक का सामना करना पड़ा। इसके अलावा एक्टिविस्टों ने इस प्रोजेक्ट को लाखों पेड़ों की कटाई और पन्ना टाइगर रिजर्व के कोर क्षेत्र को नष्ट करने जैसे मामले को लेकर प्रदर्शन भी किया। इनकी वजह से इस परियोजना में लगातार देरी होती चली गई।

क्या है केन-बेतवा लिंक परियोजना?

यह देश की पहली नदी जोड़ो योजना है, जो मध्य प्रदेश के छतरपुर और पन्ना जिले में केन नदी पर बन रही है। इसके तहत पन्ना टाइगर रिजर्व में केन नदी पर 77 मीटर ऊंचाई और 2.13 किलोमीटर लंबाई का बांध बनेगा। दो टनल भी बनेंगी, जिसमें करीब तीन हजार मीलियन घन मीटर जल का भंडारण होगा। इसके अलावा केन नदी में बांध से बचा पानी बेतवा नदी में छोड़ा जाएगा। इस योजना से मध्य प्रदेश में 103 मेगावॉट जल विद्युत और 27 मेगावॉट सौर ऊर्जा का भी उत्पादन होगा, जिसके लिए दो पॉवर प्लांट बनाए जाएंगे। इनकी क्षमता 60 मेगावॉट और 18 मेगावॉट की होगी।

PM ने खजुराहो में अटल ग्राम सेवा सदनों के लिए भूमिपूजन किया

MP की 44 लाख, UP की 21 लाख आबादी को पेयजल सुविधा

इस परियोजना का लाभ मध्य प्रदेश के पन्ना, दमोह, छतरपुर, टीकमगढ़, निवाड़ी, सागर, रायसेन, विदिशा, शिवपुरी, दतिया समेत 10 जिलों को मिलेगा। इन जिलों के लगभग दो हजार गावों की 8.11 लाख हेक्टेयर जमीन में सिंचाई हो सकेगी। इन जमीनों से जुड़े 7 लाख किसान परिवारों को सीधा फायदा होगा। इसके अलावा उत्तर प्रदेश के 1.92 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में भी सिंचाई की सुविधा मिलेगी। इस परियोजना से मध्य प्रदेश की 44 लाख और उत्तर प्रदेश की 21 लाख आबादी को पेयजल की सुविधा भी मिलेगी।

दो चरणों में पूरा होगा काम, लगेंगे आठ साल:

प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए आठ साल का समय लगेगा। पहले चरण में MP के छतरपुर, पन्ना जिलों में केन नदी पर बांध बनाया जाएगा। दूसरे चरण में विदिशा में बेतवा नदी, सागर जिले के बीना में, शिवपुरी में उर नदी पर बांध बनेंगे। दूसरे चरण में सात बांधों का निर्माण किया जाएगा।

क्यों पड़ी इस परियोजना की जरूरत?:

देश के कई हिस्से में सूखा पड़ जाता है, तो कहीं बाढ़ आ जाती है। इस समस्या को कम करने के लिए नैशनल पर्सपेक्टिव प्लान बनाया गया था। इसमें पूरे देश में कुल तीस रिवर इंटरलिंकिंग प्रोजेक्ट बनाने की योजना है। देश की सभी नदियों को एक-दूसरे से कनेक्ट कर दिया जाएगा, जिससे किसी हिस्से का अधिक पानी वहां पहुंच सके, जहां पानी की कमी है। प्रोजेक्ट प्लान की पहली कड़ी है।

किस तरह की चिंता जताई जा रही?:

प्रोजेक्ट से जितना फायदा होगा, उतना ही नुकसान होने की भी संभावना है। केन-बेतवा लिंक परियोजना से सबसे ज्यादा नुकसान पन्ना टाइगर रिजर्व को हो सकता है। इसके चलते रिजर्व का 57.21 वर्ग किलोमीटर हिस्सा पानी में डूब जाएगा। इससे जंगल और दूसरे कई इलाके डूब क्षेत्र में बदल सकते हैं। नदियों को जोड़ने से उनकी पारिस्थितिकी पर भी असर पड़ेगा।